पेज - ① {कनक पटेल (हिन्दी विभाग)
वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर
दिनांक - 13.05.2020}

मतिराम का कवि परिचय

शृंगार रस को रसशिरोमणि मानकर केवल उसी का सांगोपांग विवेचन करनेवाले आचार्यों में मतिराम का नाम सबसे पहले लिया जा सकता है। इनका जन्म 1675 वि० में तिकवांपुर (कानपुर) में हुआ था। इनके पिता का नाम विश्वनाथ त्रिपाठी था। ये सम्राट जहाँगीर, बूंदी - नरेश राव भावसिंह हाड़ा, कुमायूँ - नरेश ज्ञानचन्द, श्रीनगर - नरेश स्वरूपसिंह बुन्देला आदि अनेक राजाओं के आश्रय में रहे।

इनके द्वारा रचित ये आठ ग्रन्थ कहे जाते हैं — फूलमंजरी, लक्षण शृंगार, साहित्यसार, रसराज, ललित ललाम, सतसई, अलंकार - पंचाशिका और वृत्तकौमुदी।

Scanned with CamScanner

इनमें 'लक्षणशृंगार' और 'साहित्यसार' आज उपलब्ध नहीं है। अपनी सरसता और सरलता के कारण उपर्युक्त ग्रंथ अत्यधिक लोकप्रिय है। 'बिहारीसतसई' के समान इनकी 'मतिरामसतसई' काव्योचित उत्कृष्टता में किसी मानी में कम नहीं है। लक्षणग्रंथों में 'रसराज' और 'ललितललाम' का प्रयोग रस और अलंकार की शिक्षा के लिए बराबर होता आया है। 'रसराज' में शृंगार रस का सुन्दर वर्णन है तथा 'ललित-ललाम' में अलंकारों के उदाहरण बहुत ही स्पष्टरूप में लिखे गए हैं।

'रसराज' में शृंगार रस और उसके आलम्बन नायक-नायिकाभेद का विवेचन किया गया है। इसमें दोहों, कवितों

और सवैयों में उक्त विषय को मनोयोगपूर्वक प्रस्तुत किया गया है। ग्रंथकार ने आरम्भ में नायिका और नायक को शृंगार के आलम्बन रूप में स्वीकार करते हुए क्रमशः दोनों का निरूपण भानुदत्त की 'रसमंजरी' और रहीम के 'बरवै नायिकाभेद' के आधार पर किया गया है।

ग्रन्थकार की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह संस्कृत ग्रन्थों का आश्रय लेते हुए भी उनका अन्धानुकरण नहीं करता। 'रसराज' के उदाहरणों का वर्ण्य विषय यद्यपि शृंगार ही है तथापि आपने अन्य ग्रन्थों में मतिराम ने राजप्रशस्ति को भी अपनी कविता का विषय बनाया है। कवित्व की दृष्टि से इन दोनों विषयों से सम्बद्ध रचनाएँ अत्यन्त सरस हैं।